International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वैदिक काल में गणतंत्रीय तत्वों का स्वरूप और विकास

डॉ० प्रीतम कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग
काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर, भदोही ।

सारांश:

प्रस्तुत शोध पत्र वैदिक वांग्मय में निहित गणतंत्रीय और लोकतांत्रिक तत्वों का अन्वेषण करता है। ऋग्वेद से लेकर अथर्ववेद तक, भारतीय दर्शन के प्राचीनतम ग्रंथों में 'विश', 'सभा', 'समिति' और 'गण' जैसी संस्थाओं के प्रमाण मिलते हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि प्राचीन भारतीय समाज केवल राजतंत्रात्मक नहीं, बल्कि सहभागी और लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित था। यह पत्र सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में इन संस्थाओं के उद्भव, स्वरूप और उनकी कार्यप्रणाली का साक्ष्यों के साथ विश्लेषण करता है।

कीवर्ड्स (Keywords):

वैदिक काल, गणतन्त्र, ऋग्वेद, सभा और समिति, विश, प्राचीन भारतीय राजनीति, गणपति।

प्रस्तावना :

भारतीय दर्शन में वेद प्राचीनतम ग्रंथ हैं। इनमें भी ऋग्वेद को सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ माना जाता है। आर्यों का सामाजिक विकास इन्हीं ग्रंथों से आविर्भूत माना जाता है। वैदिक वांग्मय में राजनीतिक तत्व प्रचुर मात्रा में हैं, विराट, स्वराट, सम्राट, आधिपति जैसे शब्दों का प्रयोग इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। वैदिक काल में जिन संस्थाओं ने जन्म लिया उनका आधार प्रमुखतया सामाजिक, आर्थिक और क्षेत्रीय था। सामाजिक संस्थाओं में प्रथम संस्था कुटुम्ब को माना जा सकता है, जिसकी उत्पत्ति का आधार मानव प्रकृति थी। बुद्धिजीवी मानव समाज ने सर्वप्रथम जिस संस्था की कल्पना की वह स्वाभाविक एवं सामाजिक संस्था कुटुम्ब ही था। तत्कालीन परिस्थितियों में संसाधनों की प्रचुरता की तुलना में जनसंख्या बहुत कम थी। कालान्तर में आत्मरक्षार्थ इन्हें एक संगठन की आवश्यकता महसूस हुई क्योंकि शक्तिशाली पशुओं का प्रतिरोध अकेले नहीं किया जा सकता था। अतः प्राणरक्षा के उद्देश्य से मनुष्य गृहनिर्माण एवं अग्नि के प्रयोग से पारिवारिक परिवेश में भयमुक्त होकर सुखपूर्वक रहने लगे। एस० ए० डॉगे ने [1] भी तत्कालीन मनुष्य की जीविका की समस्या को सुलभ बताया है।

कृषि प्रधान समाज और गृहपति की भूमिका

पारिवारिक पृष्ठभूमि पर वैदिक समाज शनैः शनैः कृषि प्रधान समाज होता गया। यजुर्वेद में [2] सुसस्य कृषि के लिए प्रार्थना किया जाना कृषि प्रधान समाज का द्योतक है। कृषिकर्म में प्रवृत्त होने पर मानव समाज ने पशुपालन की उपयोगिता को भी अंगीकार किया। यहीं से परिवार के कार्यक्षेत्र की परिधि का विस्तार हुआ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पारिवारिक नियन्त्रक तथा निर्देशक का स्थान गृहपति ने लेना प्रारम्भ किया। गृहपति के कुलसंचालन का तौर-तरीका प्रजातन्त्रीय पद्धति पर आधारित होता था।

धार्मिक कृत्य और सामूहिक चेतना

वैदिक कालीन समाज के गणतंत्रीय तत्वों के विकास में धार्मिक एवं सामूहिक कृत्य के रूप में यज्ञों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल [3] से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि यज्ञकर्म में बहुत से मनुष्य सम्मिलित होते थे। ऋग्वेद में उल्लिखित ब्रह्मणस्पति [4] तथा सदसस्पति [5] शब्दों से ऐसा संकेत मिलता है कि लोग उस समय सभा का निर्माण कर उसमें एकत्रित होते थे। सम्भवतः इस सभा में विद्वान नेता के रूप में सभापति की नियुक्ति की जाती थी। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल [6] में ही अग्निवाचक शब्द के रूप में 'विशपति' शब्द का भी उल्लेख आया है। ऋग्वेद तथा यजुर्वेद [7] में प्रयुक्त विशेषणों से यह ज्ञात होता है कि मनुष्य अग्नि की पदवी विशपति के रूप में धारण करता था। इस विशपति का विधिवेत्ता, विद्वान, बुद्धिमान और ऐश्वर्यमान होना आवश्यक था।

'विश' एवं गणतंत्रीय संचालन

आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुप्रसिद्ध संस्था 'विश' का भी उल्लेख वेदों में मिलता है। डा० बेनीप्रसाद [8] ने भी अल्तेकर महोदय के मत का समर्थन कर ग्रामों के समुदाय को विश बताया है। तात्पर्य यह है कि विश एक सामूहिक संस्था थी जिसमें जनसाधारण का योगदान था। इस सामूहिक परम्परा का उल्लेख अथर्ववेद [9] में मिलता है जहाँ राजा मंत्रियों की तरफ संकेत कर कहता है कि हे पर्ण! तुम मेरे लिए रथकारों, कर्मकारों, सूतों तथा ग्रामीणों आदि को मेरे पास लाओ। अथर्ववेद के एक मंत्र [10] से स्पष्ट होता है कि विश को आर्थिक क्षेत्रों के साथ ही राजनीतिक क्षेत्र में भी विशिष्ट स्थान प्राप्त था जिसके प्रधान का निर्वाचन किया जाता था। कालान्तर में विश का स्थान सभा तथा समिति जैसी संस्थाओं ने ले लिया, जिनका स्वरूप विशुद्ध रूप से प्रजातांत्रिक था।

भ्रमणशील गणराज्य और सैन्य संगठन

वेदों में गणराज्यों के भी उल्लेख हैं जो जनतंत्र के पर्याय माने जाते हैं। वैदिककालीन गणराज्य क्षेत्ररहित अस्थिर गणराज्य थे। प्रो० आर० एस० शर्मा [11] ने यह मत व्यक्त किया है कि वैदिककालीन गणों का आर्थिक आधार पशुपालन था। ये गणराज्य किसी निश्चित एवं क्षेत्रविशेष में संगठित न होकर अपने पशुओं के झुंड के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान तक भ्रमण किया करते थे। ऋग्वेद [12] तथा अथर्ववेद [13] में शक्तिशाली मरूतों के गण का उल्लेख सूर्य या इन्द्र के नियन्त्रण में सेना और संगठित दल के रूप में मिलता है। ऋग्वेद में [14] बहादुर सैनिकों को गणों अथवा समूह में मार्च करते हुए दर्शाया गया है। तत्कालीन कुछ गण शस्त्रयुक्त स्वयं संचालित संगठन थे।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.9 Issue 11, November 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'संग्राम' की अवधारणा एवं सैन्य नेतृत्व

वैदिक ग्रंथों में 'संग्राम' नामक संस्था का भी उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद [15] के साक्ष्यों के अनुसार यह आम लोगों की सभा प्रतीत होती है। मैकडोनल एवं कीथ [16] के अनुसार संग्राम का तात्पर्य एकत्रित सैनिकों के संगठन या समूह से है। ऐसा प्रतीत होता है कि संग्राम शांति एवं युद्धकालीन सभा का द्योतक है। संग्राम संभवतः एक प्रकार की नागरिकों की सेना होती थी और राष्ट्र के योग्य नागरिक इसके सदस्य होते थे। सेनानी स्वयं इस सैन्य संगठन का प्रमुख नेता होता था। वेदों में गण के नेता को साधारणतया 'गणपति' नाम से सम्बोधित किया गया है। ऋग्वेद में [17] इन्द्र को और ऐतरेय ब्राह्मण में [18] ब्रह्मणस्पति को गणपति के रूप में उल्लिखित किया गया है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में भारतीय राजनीतिक चेतना अत्यंत विकसित थी। यद्यपि ये गणराज्य आधुनिक अर्थों में भौगोलिक रूप से स्थिर नहीं थे, किंतु इनका संचालन पूर्णतः प्रजातांत्रिक मूल्यों पर आधारित था। 'गणपति' और 'विशपति' जैसे पदों का निर्वाचन और सामूहिक निर्णयों की प्रधानता यह सिद्ध करती है कि भारत में लोकतंत्र के बीज अत्यंत प्राचीन हैं। यही वैदिक संस्थाएँ आगे चलकर बुद्धकालीन सुदृढ़ गणराज्यों के विकास का आधार बनीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉगे, एस० ए०, पृ०-36।
2. यजु०, 3. 10: "सु सस्याः कृषीस्कृषिः"।
3. ऋ०, 1. 3. 10. 5-12।
4. ऋ०, 15. 18. 3 : "मा नः शंसो अररुषो धूर्तिः प्रणंगमर्त्यस्य। रक्षाणां ब्रह्मणस्पते।"
5. वहीं, 1. 5. 18. 6: "सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनि मेघा मयासिषम्।"
6. वहीं, 1. 7. 31. 11: "त्यामग्ने प्रथममायुमायवे देवा अकृण्वन्नहुषस्य विश्पतिम्।"
7. वहीं, 2. 1. 9. 1: "अदब्धव्रतमतिर्वसिष्ठ सहस्रम्भरः शुचिजिह्वो अग्निः" तथा यजु०, 27. 3: "त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा"।
8. प्रसाद, बेनी, *द स्टेट इन एन्श्येण्ट इण्डिया*, पृ० 24।
9. अथर्व०, 3. 5. 6-7।
10. वहीं, 3. 4. 2 :"त्वां विशो वृणता राज्याय"।
11. शर्मा, आर० एस०, *ऐस्पेक्ट्स आफ पालिटिकल आइडियाज एण्ड इन्स्टिच्यूशन्स इन एन्नश्येण्ट इंडिया*, पृ० 115।
12. ऋ०, 3. 3. 35. 9।

13. अथर्व०, 13. 4. 8।
14. ऋ०, 1. 11. 64. 9।
15. वहीं, 10, 14. 4।
16. मैकडोनल एवं कीथ, *वैदिक इण्डेक्स*, भाग-2, पृ० 460।
17. ऋ०, 10, 10, 113, 9।
18. ऐ० ब्रा०, 1. 4. 21: "गणानांत्वागणपतिहवामह इतिब्राह्मण स्पत्यंब्रह्मवैगृह स्पतिः"।